

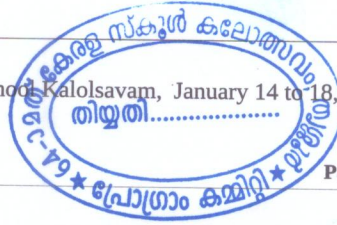
विषय : मिट्टी की पुकार

मिट्टी की गंध

बारिश की शब्द सुनकर
मैं बाहर की ओर देखा
अंदर मैं अकेला था
लेकिन मेरा घर भरा लोगों से।

आं गंधा एक सुंदर गंध
मिट्टी की गंध
पेड़ों और पौधे नृत्य किया
चिड़ियों ने गाया
एक गान बना बारिश
उस गंध में।

अचानक कुछ लोगों की
शेना सुना मैं,
बाहर निकला देखने के लिए
वहाँ था एक शरीर निश्चलता से।



मुझे पता नहीं क्या हुआ ?
बड़ा हुआ बारिश की शब्द,
बाहर लाया शरीर मिट्टी की गंध से भरा,
मैं रोया ।

तब मैं प्रकृति को देखा

अचानक एक शब्द से

मैं कंपने शुरू किया

"क्या हुआ ?" मैं पूछा

"माता और पिता ?"

निश्चयता से भरा अस्पताल

मेरा रोना शब्द तोड़ा ।

मेरा स्वप्न आज भी माता और पिता का,
वहाँ दो शरीरों था निश्चयता से...

खतम हुआ बारिश, लेकिन

वहाँ था मिट्टी की गंध ।

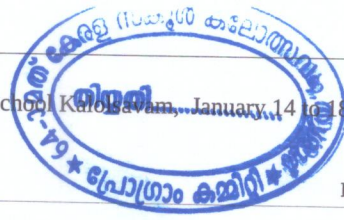
"मिट्टी की पुकार, कुछ समय

वह अच्छा नहीं, वह हमारा अंत...." पिता की वाक्यों

सोचकर मैं रोता

तब हुआ मिट्टी की गंध

वह मेरा माँ और पिता का था ।



തब हुआ बारिश मेरा आँसू को लाया,
मिदती की गंध आज भी मेरा साथ है
मुझे हँसी बनकर मेरा माता और पिता के बिना,
मैं मुस्करा, माता और पिता केलिम मुस्करा
अगला जीवन केलिम, मैं तैयार हुआ।

मिदती की पुकार मुझे अकेला बना
लेकिन,
मिदती की गंध वह
मेरा पिता और माता की गंध
मेरा जीवन की गंध
मेरा खुश की गंध
मेरा मन की गंध
वह मुझे जीवन दिया।

ईश्वर की पुकार है
मिदती की पुकार
मेरा खुश की पुकार
मेरा माता और पिता की पुकार
लेकिन वह मिदती की गंध
मेरा जीवन और मन की गंध
मेरा ही गंध हुआ ॥